



अग्निपथ

॥ इषुवन्तो विश्वमार्यम् ॥

वर्ष : १५ अंक : ०३-०४ तंत्री : अरविंद के. राणा • तारीख : २३-०१-२०१४, गुड्वार R.N.I. No. GUJGUJ/2000/1951 • किंमत : ₹. ४.०० • पाना : ४

आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट द्वारा संयालित दर्शनयोग महाविद्यालय, रोजड, भाते स्वामी सत्यपतिजनी अध्यक्षतामां

ब्रह्मचारी आचार्य सुमेरुप्रसादजुनो सन्यासग्रहण समारोह योभयो

दर्शनयोग महाविद्यालयना अनेक ब्रह्मचारीओं अशाश्रममां प्रवेश कर्यो छे. ताजेतरमां ज दर्शनयोग महाविद्यालयना वधु अंक ब्रह्मचारी आचार्यश्री सुमेरुप्रसादजुनो द्वारा सन्यासनी दिक्षा लेवामां आवी छे. आचार्य सुमेरुप्रसादजुनो लवेथी स्वामी

दर्शनयोग महाविद्यालयना ब्रह्मचारीओं, वानप्रस्थ साधक आश्रमना ब्रह्मचारीओं, आर्यवन विकास फार्म ट्रस्टना पदाधिकारीओं उपरांत मोटी संख्यामां वैदिक धर्मग्रीमीओं छाजर रक्षा हता. आ प्रसंगे पोताना प्रासंगिक उद्बोधनमां श्री कमलेशकुमार शास्त्री के जेमना

दिक्षा लेवी जइरी छे. सन्यासनी दिक्षा लेनारे संस्कृतिनी रक्षा करवा साथे पोताना आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा ईश्वर अने आत्मा संबंधी ज्ञानथी लोकोने माहितगार करवा जेईछे. वैदिक संस्थान ओढवना श्री प्रह्लुलभाई वोरामे विद्यालयना ब्रह्मचारीओं, सन्यासीओंने के जेओ

अने आजे पछ तेओ आ कार्य करी रक्षा छे. तेमछे वधुने वधु ब्रह्मचारीओं स्वामी ब्रह्मविदानंदजुनो सानिध्यमां सन्यासनी दिक्षा लई मनुष्योना जवनधोरणने उंचुं लई जवामां पोतानुं योगदान आपसे तेवी आशा व्यक्त करी हती. आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट रोजडना सेक्रेटरी श्री जशवंतभाई पोकारे आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट द्वारा यलाववामां आवती दर्शनयोग महाविद्यालयना विकासनी माहिती लोको समक्ष भूकी हती अने सन्यासनी दिक्षा लई रहला स्वामी ब्रह्मविदानंदजुनो अभिनंदन पाठव्या हता अने आशा व्यक्त करी हती के तेओ वैदिक ज्ञानना प्रचार-प्रसारमां पोतानुं महत्तम योगदान आपसे.



ब्रह्मविदानंद सरस्वतीना नवानामथी ओगभासे. विद्यालयना अन्य ब्रह्मचारीओं पछ वैदिक सन्यासनीनी आ यादीमां जेडाववा माटेनी तैयारीओ करी रक्षा छे. आचार्य सुमेरुप्रसादजुनो सन्यास आश्रममां प्रवेश करतां पढेलां दोड वर्ष सुधी मौन व्रतनुं पालन कर्यो हतुं.

द्वारा आ विधी करवामां आवी हती तेमछे सन्यास आश्रम संस्कारमां अलभ्य दान संदर्भे जषायुं हतुं के, सन्यासीअने अन्य लोकोने लभ्यरहित अन्य लोकोने पोताना ज्ञान अने अनुभवनो लाभ आपवो जेईछे. अने आ परंपरा आपषां देशमां छजरो सन्यासीओ द्वारा प्रस्थापित करवामां आवी छे.

गृहस्थीओ उपर निर्भर छे तेमने वधारे सहयोग आपवा अनुरोध कर्यो हतो. गांधीनगरना प्रभर वैदिक प्रवक्तता श्री अवधेशप्रसाद पांडेयजुनो पोताना अनुभवने याद करतां कहुं हतुं के, तेओ २० वर्ष पढेलां प्रथम वनत क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिबिर समये स्वामी सत्यपतिजुने दर्शनयोग महाविद्यालय भाते मण्यु हता. अने तेओ तेमछे प्राप्त करेला ज्ञानने जन-जन सुधी पढीयाउवा माटे कटिबद्ध छे.

अने आजे पछ तेओ आ कार्य करी रक्षा छे. तेमछे वधुने वधु ब्रह्मचारीओं स्वामी ब्रह्मविदानंदजुनो सानिध्यमां सन्यासनी दिक्षा लई मनुष्योना जवनधोरणने उंचुं लई जवामां पोतानुं योगदान आपसे तेवी आशा व्यक्त करी हती. आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट रोजडना सेक्रेटरी श्री जशवंतभाई पोकारे आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट द्वारा यलाववामां आवती दर्शनयोग महाविद्यालयना विकासनी माहिती लोको समक्ष भूकी हती अने सन्यासनी दिक्षा लई रहला स्वामी ब्रह्मविदानंदजुनो अभिनंदन पाठव्या हता अने आशा व्यक्त करी हती के तेओ वैदिक ज्ञानना प्रचार-प्रसारमां पोतानुं महत्तम योगदान आपसे.

करतां पढेलां पोतानी जतने तैयार करी छे अने पोतानी जवाबदारीओ पछ पूरी करी छे. स्वामी वेदापतिजुनो ईश्वरपूजा विशे समजयुं हतुं. आचार्य सत्यपतिजुनो जषायुं हतुं के, सन्यास आश्रम संस्कार अे छेल्वो संस्कार छे. सन्यासी दूनिया माटे छेव छे अने लोकोने अध्यात्मनुं ज्ञान पीरसे छे. स्वामी ध्रुवदेवजुनो कहुं हतुं के दरेक व्यक्तिते पोतानी इरजो अने जवाबदारीओ आश्रम व्यवस्था अनुसार निभाववी जेईछे. अने तेना द्वारा ज आपछे अध्यात्मना क्षेत्रमां आगण वधी शकीशुं आपछे अे सतत ध्यानमां राभवुं जेईछे के ईश्वर आपषांने सतत जेई रबो छे सांभणी रबो छे.

कार्यक्रमोने कारखे आपषाणी ईश्वर प्रत्येनी श्रद्धामां वधारो थाय छे. पोताना टेलिफोनिक संदेशामां स्वामी विवेकानंदजुनो स्वामी ब्रह्मविदानंदजुनो वैदिक परंपरा प्रत्येना कमिटेन्ट अने पार्टीसीपेशनना वभाषण करतां कहुं हतुं के, लवे तेओ उच्य वैराग्य प्राप्त करवा आत्म चिंतन करे अने समाजनी वधु सारी सेवा करे तेवी शुभकाना पछ तेमछे पाठवी हती.



तमाम सहयोगीओनो पछ मजबुत बनीने आपछे आभार मान्यो हतो. पोताना आशीर्वचन आपतां स्वामी सत्यपतिजुनो परिप्राजकजुनो जषायुं हतुं के आपछे ईश्वर पर श्रद्धा राषीने दररोज स्वाध्याय करवो जेईछे. तेनी कोईने जबर छोटी नथी तेथी आपछे समयनो सहउपयोग करवो जेईछे. तेमछे दररोज ईश्वरनी उपासना करवा माटे पछ प्रेरणा आपी हती. तेमछे आशिर्वचन आपतां जषायुं हतुं के, मानसिक अने शारीरिक रीते

मजबुत बनीने आपछे अध्यात्मना क्षेत्रमां आगण वधीने अंते मोक्ष प्राप्ति तरफ आगण वधुं जेईछे. अंते दर्शनयोग महाविद्यालयना ब्रह्मचारी श्री दिनेशकुमार सौंनो आभार व्यक्त करतां जषायुं हतुं के स्वामी ब्रह्मविदानंदजुनो आ सन्यास दिक्षा समारंभ अे दर्शनयोग महाविद्यालय माटे अेक टर्नई पोईन्ट साबित थरो. विद्यालयमां अभ्यास करतां अने लविध्यमां विद्यालयमां प्रवेश मेणवना माटे आ समारंभ अे प्रेरणादायी बनरो.

आर्यजगत में एक अनूठी, दुर्लभ व अलौकिक घटना की पुनरावृत्ति

दिवंगत् श्रीमती ब्रजलता आर्य के देह-दानने महर्षि दधीचि का स्मरण कराया

स्न्यास दिक्षा समारोह स्वामी सत्यपतिजुनो परिप्राजकजुनो अध्यक्षतामां योभयो हतो. आ समारोहमां

द्वारा आ विधी करवामां आवी हती तेमछे सन्यास आश्रम संस्कारमां अलभ्य दान संदर्भे जषायुं हतुं के, सन्यासीअने अन्य लोकोने लभ्यरहित अन्य लोकोने पोताना ज्ञान अने अनुभवनो लाभ आपवो जेईछे. अने आ परंपरा आपषां देशमां छजरो सन्यासीओ द्वारा प्रस्थापित करवामां आवी छे.

गृहस्थीओ उपर निर्भर छे तेमने वधारे सहयोग आपवा अनुरोध कर्यो हतो. गांधीनगरना प्रभर वैदिक प्रवक्तता श्री अवधेशप्रसाद पांडेयजुनो पोताना अनुभवने याद करतां कहुं हतुं के, तेओ २० वर्ष पढेलां प्रथम वनत क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिबिर समये स्वामी सत्यपतिजुने दर्शनयोग महाविद्यालय भाते मण्यु हता. अने तेओ तेमछे प्राप्त करेला ज्ञानने जन-जन सुधी पढीयाउवा माटे कटिबद्ध छे.

आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन 'सांवेदिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के उपप्रधान एवं गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचंद्र आर्य की धर्मपत्नि श्रीमती ब्रजलता आर्य का ता. ०१/२०१४ को अहमदाबाद में दुःखद निधन हो गया। उन्होंने अपने पूज्य ससुरजी स्व. श्री बंसीधरजी अग्रवाल के पद चिन्हो का अनुसरण करते हुए मरणोपरान्त चक्षुदान एवं देह-दान की इच्छा व्यक्त की थी। तदनुसार श्रीमती ब्रजलता आर्य के पार्थिव शरीर को १/०१/२०१४ को सम्पूर्ण वैदिक अनुष्ठान के पश्चात् अहमदाबाद के सिविल होस्पिटल के मेडीकल कोलेज को शोधकार्य हेतु ससम्मान अर्पित कर दिया गया।



रखते हुए एक आदर्श एवं करुणामयी नारी के रूप में उन्होंने अपने परिवार को किस प्रकार संस्कारित एवं पोषित किया इसका ज्वलंत उदाहरण उनकी मेधावी एवं सुशील पुत्रवधु श्रीमती जया आर्य के निम्नलिखित विचारों से एवं उनकी काव्य रचना से स्पष्ट झलकता है।

सरलता व प्रेम से करना उनकी खासियत थी। जितने भी लोग उनके सम्पर्क में आते वे उनकी सहज मुस्कान और सरल व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना न रहते थे और वे जितने भी लोगों के सम्पर्क में आती थी, सभी के लिये मदद

करने की इच्छा व ममता उनके अन्तर में समाहित रहती थी। ऐसी दिवात्मा सभी पुत्रवधुओं को प्राप्त हो, ऐसी प्रभु से कामना करती हुई पूज्या मां के चरणों में निम्न भाव-प्रसून अर्पित कर रही हूँ -

एक एक फूल परोया तुमने,
बडे जतन से बडे यतन से,
बनाई सुन्दर जीवन-माल,
तुमको प्रणाम, तुमको प्रणाम।

जीवन धूप में जब त्रस्त होते,
तब-तब स्नेह छाया दी तुमने,
बनकर एक तरुवर विशाल,
तुमको प्रणाम, तुमको प्रणाम।

तन का सुख न होने पर भी,
बन कर सजग प्रहरी तुम,
करती रहीं सबकी देखभाल,
तुमको प्रणाम, तुमको प्रणाम।

कटु वचनों से तुम दूर सदा,
प्रम मधुरता, शीतलता, अपनापन
वाणी में तुमने रखा संभाल,
तुमको प्रणाम, तुमको प्रणाम।
(जया आर्य)

धन्य हे वो मा जिसकी पुत्रवधू के ये उदार एक उत्कृष्ट परिवार के उच्च वैदिक संस्कारों को उजागर करते हैं। इस परिवार ने शोकग्रस्त होते हुए भी पूज्य माताजी का नेत्रदान और देहदान करके समाज के लिए जो प्रशंसनीय और अनुकरणीय कदम लिया है उसके लिये हम उन्हें नमन करते हैं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत् श्रीमती ब्रजलताजी आर्य के परिवार में पूर्व से ही विद्यमान धार्मिक विचारों को और भी अधिक दृढता प्रदान करें तथा दिवंगत् आत्मा को अपनी ममतामय गो में स्थान प्रदान करें एवं सम्पूर्ण परिवार को इस दारुण दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करें। इस दिवंगत् पुण्यात्मा की स्मृति न केवल इस परिवार में कपितु पूरे आर्यजगत में स्थायी रहे, ऐसी कामनाओं के साथ अग्निपथ परिवार अपनी हार्दिक संवेदना प्रगट करतां है।

यरोतर प्रदेश आर्यसमाज आषांड द्वारा अक्षरधाम स्थित आर्ष संशोधन केन्द्रन गुजराती भाषाना वेदोनो सेट अर्पण करायो

आषांड यरोतर प्रदेश आर्यसमाज आषांडना मंत्री आर्डी. श्री अशोक डी. पटेलनी अेक ईच्छा हती के गांधीनगर स्थित अक्षरधाम भाते गुजराती भाषामां अनुवाद करेला तमाम वेद उपलब्ध होवा जेईछे. आ माटे तेमछे यरोतर प्रदेश आर्यसमाज द्वारा संयालित आर्यवीर दणना प्रेरक तथा मार्गदर्शक श्री अरविंदभाई राणाओ संपर्क कर्यो. अगाड यजूर्वेद तथा ऋग्वेद भाग - १ वानप्रस्थ साधक आश्रम द्वारा अक्षरधामने भेट आपवामां आवेला हतो. त्वार भाद छपायेल ऋग्वेद भाग २ अने उ तथा सामवेदना ग्रंथोने अर्पण करवानुं नक्की थयुं.



सर्वोत्कर्ष सेवा संस्थानना मेनेछंग ट्रस्टी श्री अरविंदभाई राणाानी साथे गांधीनगरना वैदिकधर्मा श्री लक्ष्मणभाई पारसिया, श्री भणुदेवभाई आर. पटेल, श्री नरशीभाई पटेल तथा अग्निपथना मेनेछंग तंत्री श्री हरिभाई राणा ग्रंथ अेनायत करवा गया हता. आ प्रसंगे स्वामी श्रुतिप्रकाशजुने वेदना ग्रंथो अर्पण करवामां आव्या. अग्निपथना तंत्री तथा

ज वेदोना विविध विद्वानोना भाष्योनुं तुलनात्मक अध्ययन करवानुं काम यावी रह्युं छे. आ माटे अमे आर्यसमाजनी विविध गुरुकुलोनो पछ संपर्क कर्यो छे. विश्व प्रसिद्ध गुरुकुल कांगड़ीनी उभर मुवाकात लई वेदो उपर विशेष अध्ययन करवानो प्रयत्न करवामां आवी रबो छे. यर्था दरभ्यान स्वामीजुनो वैदिक विद्वानो द्वारा दर्शन शास्त्रोना रहस्यो भोलवा करेला पुरुषार्थनी लरपुर प्रसंशा करी हती.

जीवन पर्यन्त अपने पति का साथ दिया। वे जीवन भर आर्यसमाज से जुडी रहीं। शारीरिक कष्ट एवं असुविधा महसूस करते हुए भी सामाजिक कार्यों के लिये उन्होंने अपने पति को सदैव मुक्त रखा। किसी भी व्यक्ति के उदार एवं महान कार्यों के पीछे सदैव उसकी सहधर्मिणी की मूक तपस्या होती है। वे केवल अपने पति श्री सुरेशचंद्र आर्य की प्रेरणा बनी अपितु उन्होंने स्वयं भी संगठन एवं आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग के लिये दिल्ली सहित विदेशों में भी आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों आदि में भाग लेकर भारत का एवं गुजरात प्रांत का प्रतिनिधित्व किया। वे हमेशा सभी धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में उत्साहपूर्वक भाग लेकर सक्रिय रहती थी। जीवनभर परोपकार एवं सेवा कार्यों में समर्पित उनका सरल व्यक्तित्व सदैव सभी के लिए प्रेरणा-स्रोत बना रहेगा। प्रभु के प्रति अनन्य श्रद्धा

અગ્નિમીલે પુરોહિતં યજ્ઞસ્ય દેવમૃત્વિજમ્ । હોતારં રત્નધાતમમ્ ॥

વ્યાખ્યાન -

(અગ્નિમીલે) સબ જગત્ કો ઉત્પન્ન કરકે સંસારસ્થ પદાર્થો કા ઓર પરમાત્મા કા જિસસે પદાર્થ જ્ઞાન હોતા હૈ, ઉસ સનાતન અપની વિદ્યા કા, સબ જીવોં કે લિયે, આદિ સુષ્ટિ મેં પરમાત્મા ને ઉપદેશ કિયા હૈ । જૈસે અપને સન્તાનોં કો પિતા ઉપદેશ કરતા હૈ વૈસે હી પરમકૃપાલુ પિતા પરમેશ્વર ને હમ સબ જીવોં કે હિત કે લિયે સુગમતા સે વેદોં કા ઉપદેશ કિયા હૈ । જિસસે ધર્મ, અર્થ, કામ, મોક્ષ ઓર સબ પદાર્થો કા વિજ્ઞાન ઓર ઉત્તરે યથાવત્ ઉપકાર લેવેં । ઇસલિયે અત્યન્ત હિત સે હમ લોગોં કો ઉપદેશ કિયા હૈ । હમ લોગ મી અત્યન્ત પ્રેમ સે ઇસકો સ્વીકાર કરેં ।

સર્વજ્ઞ સર્વશક્તિમાનુ ન્યાયકારી આદિ વિશેષણયુક્ત પરમેશ્વર અગ્નિ પિતા કે સમાન પુત્રોં કો ઉપદેશ કરતા હૈ - હે જીવ મનુષ્યદેહધારી ! 'મૈં અગ્નિ પરમાત્મા કી સ્તુતિ કરતા હૂં' એસા બોલ । ફિર જીવ બોલતા હૈ - 'જો સબકો જાનને વાલા, શુદ્ધ, સબ વિકારોં સે રહિત, સનાતન, જો સબ કાલ મેં એક રસ બના રહતા હૈ, જો અજ હૈ, જિસકા જન્મ કમી નહીં હોતા, જો અનાદિ હૈ, જિસકા આદિકારણ કોઈ નહીં, જો અનન્ત હૈ, જિસકા અન્ત કોઈ નહીં લે સકતા, જગત્ મેં જો પરિપૂર્ણ હો રહ્યા હૈ, સબ જગત્ કા આદિ કારણ ઓર પ્રકાશસ્વરૂપ હૈ, જિસકા નામ અગ્નિ હૈ, ઉસકી મૈ સ્તુતિ કરતા હૂં।' ઉસસે મિન્ન કોઈ દૂસરા ઈશ્વર નહીં હૈ ઓર ઉસકો છોડકર દૂસરે કા લેશમાત્ર મી આશ્રય મૈં કમી નહીં કરતા । કિસ પ્રયોજન કે લિયે ? ધર્મ, અર્થ, કામ ઓર મોક્ષ - ઇનકી સિદ્ધિ કે લિયે ।

અચ્ચુ ગતિપૂજનયોઃ । પીઝ પ્રાપ્તો । ઇન્ ગતી ઇત્યાદિ ઇ પાલુઓં સે અગ્નિ શબ્દ સિદ્ધિ હોતા હૈ । જો સબકો જાનતા હૈ । જો સબ વેદાદિક-શાસ્ત્રોં સે જાના જાતા હૈ, જો સબ મેં પ્રાપ્ત હો રહ્યા હૈ, જો સર્વત્ર પ્રાપ્ત હોતા હૈ, જો સબ ધર્માત્માઓં કા સત્કાર કરતા હૈ, જિસકા સત્કાર સબ વિદ્વાન્ લોગ કરતે હૈ, જો સબ સુખોં કો પ્રાપ્ત કરાતા હૈ ઓર જો સબ સુખોં કે

અર્થ ધર્માત્મા, વિદ્વાન્ વ મુમુક્ષુઓં કે દ્વારા પ્રાપ્ત કિયા જાતા હૈ, ઇસ પ્રકાર વ્યાકરણ, નિરુક્ત આદિ કે પ્રમાણોં સે, અગ્નિ શબ્દ સે પરમેશ્વર કે ગ્રહણ મેં કોઈ મી વિવાદ નહીં હૈ ।

પૂર્વોક્ત અગ્નિ કૈસા હૈ કિ (પુરોહિતઃ) સબ દેહધારિયોં કી ઉત્પત્તિ સે પ્રથમ હી સબ જગત્ ઓર સ્વમ્ભક્ત ધર્માત્માઓં કે લિયે સબ પદાર્થોં કી ઉત્પત્તિ જિસને કી હૈ । ઓર વિજ્ઞાનાદિ દાન સે જો જીવાદિ સબ સંસાર કા ધારણ ઓર પોષણ કરતા હૈ । ઇસસે પરમાત્મા કા નામ પુરોહિત હૈ । ઈશ્વર સે મિન્ન કોઈ સર્વધારક વ પોષક નહીં હૈ । (યજ્ઞસ્ય દેવમ્) યજ ધાતુ સે યજ્ઞ શબ્દ સિદ્ધિ હોતા હૈ । ઇસકા યહ અર્થ હૈ કિ જો અગ્નિહોત્ર સે લેકર અશ્વમેધ પર્યન્ત વિવિધ ક્રિયાઓં સે સિદ્ધિ હોતા હૈ, જો વાયુ ઓર વૃષ્ટિ જલ કી શુદ્ધિ દ્વારા સબ જગત્ કો સુખ દેને વાલા હૈ, ઉસકા નામ યજ્ઞ હૈ । અથવા પરમેશ્વર કે સામર્થ્ય સે (પ્રલયસમય મેં) સત્વગુણ, રજોગુણ વ

કૃષિ દયાનંદ વેદ-પદ્ધતિ, ભાવાર્થ, વ્યાખ્યાન પ્રદિપ્તિ
સંકલન : સ્વામી ધ્રુવદેવજી પરિવ્રાજક ઉપાધ્યાય, દર્શન યોગ મહાવિદ્યાલય, રોજક

તમોગુણ કી સામ્યાવસ્થા ઉત્પન્ન હોતી હૈ (સુષ્ટિ કે સમય) ઉસસે પૃથ્વી પર્યન્ત કાર્ય કારણ સંગતિ સે જો જગત્ રૂપ યજ્ઞ ઉત્પન્ન હોતા હૈ અથવા સત્યશાસ્ત્ર, સત્યધર્માચરણ, સત્પુરુષોં કે સંગ સે જો ઉત્પન્ન હોતા હૈ, જિસકા નામ વિદ્યા, જ્ઞાન ઓર યોગ હૈ । ઉસકા મી નામ યજ્ઞ હૈ ।

ઇન ત્રીનોં પ્રકાર કે યજ્ઞોં કા જો દેવ હૈ, જો સબ સુખોં કા દેને વાલા હૈ, જો સબ જગત્ કા પ્રકાશ કરને વાલા હૈ, જો સબ વિદ્વાનોં કે દ્વારા કમનીય હૈ, જો સ્વમ્ભક્તોં કો આનન્દ કરાને વાલા હૈ, જો અધાર્મિક અન્યાયકારી શત્રુઓં કે ઓર કામક્રોધાદિ શત્રુઓં કે જીતને કી ઇચ્છા પૂર્ણ કરને વાલા હૈ, ઇસસે ઈશ્વર કા નામ દેવ હૈ (ઋત્વિજમ્) જો સબ ઋતુઓં મેં પૂજને યોગ્ય હૈ, જો સુષ્ટિ કા કાલ આને પર

જગત્ રચને વાલા હૈ ઓર જ્ઞાનાદિ યજ્ઞ કી સિદ્ધિ કરને વાલા હૈ, ઇસસે ઈશ્વર કા નામ ઋત્વિજ્ઞ હૈ । ઋતુ શબ્દ પૂર્વક વિન્ન પ્રત્યયાન્ત યજ ધાતુ સે ઋત્વિજ્ઞ શબ્દ સિદ્ધિ હોતા હૈ । (હોતારમ્) જો સબ જગત્ કે જીવોં કો સબ પદાર્થોં કા દેને વાલા હૈ, જો મોક્ષ સમય મેં મુક્ત જીવોં કા ગ્રહણ કરને વાલા હૈ તથા જો વર્તમાન ઓર પ્રલય સમય મેં સબ જગત્ કા ગ્રહણ ઓર ધારણ કરને વાલા હૈ, ઇસસે પરમાત્મા કા હોતા નામ હૈ ।

(રત્નધાતમમ્) જિનમેં રમણ કરના યોગ્ય હૈ, જો પ્રકૃત્યાદિ પૃથિવી પર્યન્ત રત્ન તથા વિજ્ઞાન હીરાદિ જો રત્ન ઓર સુવર્ણાદિ જો રત્ન હૈ, જિનકે યથાવત્ ઉપયોગ કરને સે આનન્દ હોતા હૈ, ઉન રત્નોં કા સબ જીવોં કો દાન કે લિયે જો ધારણ કરતા હૈ, વહ રત્નધા કહાતા હૈ । ઓર અતિશય સે પૂર્વોક્ત રત્નોં કા ધારણ કરને વાલા હૈ, ઇસસે પરમેશ્વર કા નામ 'રત્નધાતમમ્' હૈ ।

(ઋ.દયા.કૃત ઋગ્વેદભાષ્ય કા નમૂના અંક-૨)

માવાર્થ -
પિતા કે સમાન કૃપાકારક પરમેશ્વર સબ જીવોં કે હિત ઓર સબ વિદ્યાઓં કી પ્રાપ્તિ કે લિયે કલ્પ કલ્પ કે આદિ મેં વેદ કા ઉપદેશ કરતા હૈ । જૈસે પિતા વા અધ્યાપક અપને શિષ્ય વા પુત્ર કો શિક્ષા કરતા હૈ કિ તૂ એસા કર વા એસા વચન કહ, સત્ય વચન બોલ ઇત્યાદિ શિક્ષા કો સુનકર બાલક વા શિષ્ય મી કહતા હૈ કિ સત્ય બોલૂંગા, પિતા ઓર આચાર્ય કી સેવા કરૂંગા, ઘૂટ ન કરૂંગા, ઇસ પ્રકાર જૈસે પરસ્પર શિક્ષક લોગ શિષ્ય વા લડકોં કો ઉપદેશ કરતે હૈં વૈસે હી 'અગ્નિમીલે' ઇત્યાદિ મન્ત્રોં મેં મી જાનના ચાહિયે । ક્યોંકિ ઈશ્વર ને વેદ સબ જીવોં કે ઉત્તમ સુખ કે લિયે પ્રકટ કિયા હૈ । તથા 'ઈડે' યહ ઉત્તમ પુરુષ કા પ્રયોગ બતાલા હૈ કિ વેદ સબ જીવોં કે કલ્યાણ કે લિયે પ્રકટ હુઆ ।

(ઋ.દયા. કૃત ઋગ્વેદ ભાષ્ય) (ક્રમશઃ)

વ્યક્તિએ ગુણ-ગ્રહણ કરવામાં અને દોષ છોડવામાં અત્યંત પરિશ્રમ કરવો જોઈએ

સર્વથા સર્વદા સર્વભૂતાનામનભિદ્રોહઃ અહિંસા

૫૩. સંસારના કોઈપણ પ્રાણીને કોઈપણ પ્રકારે અનુચિત પીડા ન દેવી તે અહિંસા છે. જે મનુષ્ય આ પ્રકારના આદર્શોને સામે રાખીને ચાલે છે તે આ માર્ગ પર આગળ વધી શકે છે. અન્યથા મનુષ્ય અવસરવાદી હોય છે, ગમે ત્યારે દગો થઈ શકે છે.

૫૪. જ્યારે કોઈ સાથે વાર્તાલાપ કરીએ છીએ ત્યારે વિચારીને બોલવું જેથી સામેવાળાને આનંદ થાય. જે એમ વિચારીને બોલવતો નથી તે વાણી-વ્યવહાર તથા તેનાથી મળનાર ફળોને જાણવો નથી. અને તેનો વ્યવહાર પણ સુધરી શકતો નથી.

સત્યોપદેશ
ઉપદેશક - સ્વામી સત્યપતિજી
અનુ. - જયાબેન પોરિયા (યુકે) ૨૬

૫૫. અનેક કારણોથી વ્યક્તિ પણ દુઃખ, રોગ, આદિ આવે છે. જેમ કે અવસ્થા-પરિવર્તનથી, જે કે તે શરીરનો ધર્મ છે - જેમ કે બાલ્યાવસ્થા, કિશોરાવસ્થા, યુવાવસ્થા, બુઢાપા, રોગ, મૃત્યુ વગેરે. તે સિવાય ઈશ્વરનો ન્યાય નિયમ છે. આપણા કર્મફળ કોઈ આ જન્મના અને કોઈ પૂર્વ જન્મના હોય છે. આ બધાં ઉપરાંત રાજ, પ્રજા, માતાપિતા આદિ પણ કારણ છે. તેથી તેમાં ચિંતા કરવી જોઈએ નહિં.

૫૬. વ્યક્તિએ ગુણ-ગ્રહણ કરવામાં અને દોષ છોડવામાં અત્યંત પરિશ્રમ કરવો જોઈએ. જે મનુષ્ય ગુણ-ગ્રહણ કરતો નથી તે દોષોને છોડતો નથી, તેવી વ્યક્તિનું અનુકરણ ન કરવું.

૫૭. જે વ્યક્તિ ઈશ્વરોપાસના કરે છે, તે વ્યવહારમાં ઈશ્વર-પ્રણિધાનથી યુક્ત રહે છે. તે વેદાદિ શાસ્ત્રોનું અધ્યયન-અધ્યાપન-સ્વાધ્યાય કરે છે અને નિષ્કામ-કર્મ જ કરે છે. તેને અન્ય કોઈ લૌકિક વિષય-વિચાર કરવાનો કે ભોગવવાનો સમય જ નથી હોતો. જે મનુષ્ય એવું નથી કરતો અથવા તેમાંનાં કોઈને છોડે છે, તો તે બુરાઈ અર્થાત લૌકિક વિષયભોગોથી બચી શકતો નથી. (ક્રમશઃ)

મધનું સેવન કરનાર માણસ વિદ્યાદિ શુભ ગુણોથી રહિત થઈ અનેક દોષોનો શિકાર બને છે



આર્યસમાજના સંસ્થાપકને એક તરફ પાખંડીઓ અને વિભિન્ન સંપ્રદાયોના વેદવિરુદ્ધ વિચારો સામે ટક્કર લેવી પડતી હતી, તો બીજી તરફ 'ચોકા-ચૂલામાં જ ધર્મ રહેલો છે' એવું માનનારાઓની સંકીર્ણતા વિરુદ્ધ પણ લડવું પડતું હતું. હિંદુઓનો ધર્મ કેવળ ચોકા-ચૂલાની મર્યાદા જાળવવામાં જ સમેટાઈ ગયો હતો. આ વિષે પૂના-પ્રવચનમાં ઋષિ દયાનંદે કહ્યું હતું : "આજે ઘાસનું તણખવું તોડવામાં વાર લાગે છે, પરંતુ આપણો ધર્મ તૂટવામાં વાર લાગતી નથી. ચોટલીને ગાંઠ ન વાળો તો ધર્મ ગયો. લાંબું અંગરખું પહેર્યું તો ધર્મ ગયો. ખાવા-પીવામાં તો મોટો ભખેડો ઊભો કરી દીધો છે. આ ખાવા-પીવાની વસ્તુઓએ તો વીરોને કાયર બનાવી દીધા છે, અને ચોકો લગાવીને બેઠાં બેઠાં આપણી બધી ઉત્મતા પર પણ ચોકો લાગી ગયો છે. પ્રાચીન સમયમાં બધા ક્ષત્રિય રાજાઓ અને બ્રાહ્મણ, ઋષિ વગેરે એક જ શાલા (સ્થાન)માં ભોજન કરતા હતા... બ્રાહ્મણ લોકો છુત-અછૂતનો ઢોંગ રચે છે, પરંતુ તે ઢોંગ હિંગ અને સાકર વગેરે પદાર્થોનું સેવન કરતી વખતે ક્યાં ચાલ્યો જાય છે ? જો એમ કહો કે દોષ તો ફક્ત નજરે જોવાનો જ લાગે છે, તો જે વસ્તુ નજરે જોવામાં ન આવે તેનો દોષ ન લાગતો હોય તો ભૂલથી જો ભાંગ પી લેવામાં આવે તો શું નશો નહિ કરે ?" (૧૧મું પ્રવચન)

આયુષ્યની વૃદ્ધિ યાય તેવા ઘઉં, ચોખા, ફળ, મૂળ, કંદ, દૂધ, ઘી, મીઠાઈ અને ઉત્તમ પાક એ બધા પદાર્થો ભક્ષ્ય ગણાય છે. એ બધા પદાર્થોનો સમયને અનુસરી યોગ્ય રીતે ઉપયોગ કરવો અને મિત-આહાર કરવો.

● જે પદાર્થો પોતાની પ્રકૃતિથી પ્રતિકૂળ હોય અને શરીરમાં બગાડ ઉત્પન્ન કરે એવો હોય તે પદાર્થોનો ત્યાગ કરવો, અને જે પોતાના આરોગ્યને અનુકૂળ હોય તેવા પદાર્થોને ભક્ષ્ય ગણીને ઉપયોગમાં લેવા.

● જે વસ્તુ બુદ્ધિનો નાશ કરે છે એવી વસ્તુનું કદી પણ સેવન કરવું નહીં. ગાંજા, મદ્ય, ભાંગ, અરીસ વગેરે પદાર્થો આ દષ્ટિએ ત્યાજ્ય છે.

● કોઈનું એહું ખાવું નહીં. કોઈના ભોજનની વચ્ચેમાં ખાવું નહીં. અધિક ભોજન ન કરવું અને એઠા હાથે તથા એઠે મોઢે ઊઠીને ક્યાંય બહાર જવું નહીં.

● કોઈપણ આર્ય શુદ્ધતાથી બનાવે તો તેના હાથનું ખાવામાં કશી પણ હાનિ નથી. કારણ કે બ્રાહ્મણ સ્ત્રી અથવા પુરુષ

આર્યસમાજની માન્યતાઓ
લેખક : ગજાનંદ આર્ય ૨૧ અનુ. - ભાવેશ મેરજા, ભડુચ

રસોઈ બનાવવાના, ચોકો કરવાના અને વાસણ માંજવાં આદિના બખેડામાં પડી રહે, તો વિદ્યા આદિ શુભ ગુણોની વૃદ્ધિ કદી પણ થઈ શકે નહીં.

● મદ્ય અને માંસ ખાનારાઓના હાથનું ખાવામાં આર્યોને પણ મદ્ય-માંસ આદિ ખાવાપીવાનો અપરાધ પાછળથી લાગુ પડે છે, પણ આર્યો અરસપરસ સહભોજન કરે એમાં કોઈપણ જાતનો દોષ દેખાતો નથી.

● મદ્ય તો કથન માત્ર જ એહું થાય છે. પરંતુ એ બહુવિધ ઔષધિઓનો સાર હોવાથી ખાવું જોઈએ.

મહર્ષિ દયાનંદે એક 'ગૌકરુણાનિધિ' નામનું નાનું પુસ્તક પણ લખ્યું છે, જેમાં ગાય જેવાં પશુઓની ઉપયોગિતા અને સુરક્ષા પર જોર આપવામાં આવ્યું છે. આ જ પુસ્તકમાં તેમણે માંસાહાર અને મદ્યાપનાના વિરોધમાં વિસ્તૃત ચર્ચા કરી છે. મદ્યાપના વિષે તેમણે લખ્યું છે :

"મનુષ્યને મદ્યનું સેવન કરવાથી નશો ચઢે છે અને નશાને લીધે નષ્ટબુદ્ધિ થઈ ન કરવાનું કરી બેસે છે અને કર્તવ્યને ત્યજી દે છે. ન્યાયને સ્થાને અન્યાય અને અન્યાયના સ્થાને ન્યાય આદિ વિપરીત કર્મો કરે છે. મદ્યનું નિર્માણ વિકૃત પદાર્થોમાંથી થતું હોય છે. મદ્યનું સેવન કરનારી વ્યક્તિ માંસાહારી પણ

અવશ્ય થઈ જાય છે. આત્મામાં વિકારો ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. મદ્યનું સેવન કરનાર માણસ વિદ્યાદિ શુભ ગુણોથી રહિત થઈ અનેક દોષોનો શિકાર બને છે. તે ધર્મ, અર્થ, કામ અને મોક્ષના ફળથી વંચિત રહી

- ભાંગ, તમાકુ આદિ પદાર્થો પણ માદક છે, તેનું સેવન કરવાથી બુદ્ધિનો નાશ થાય છે અને પ્રમાદ, આળસ અને હિંસક પ્રવૃત્તિ બનતી જાય છે.
- ભક્ષ્યાભક્ષ્ય વિષેના સ્વામી દયાનંદના વિચારો આર્યસમાજના પક્ષને પૂરી રીતે પ્રસ્તુત કરે છે.

પશુની માફક આહાર, નિદ્રા, ભય, મૈથુન આદિ કર્મોમાં પ્રવૃત્ત રહી મનુષ્ય જન્મને વેડફી નાખે છે. માટે નશો કરનારા મદ્ય આદિ પદાર્થોનું સેવન ન કરવું જોઈએ. ભાંગ, તમાકુ આદિ પદાર્થો પણ માદક છે, તેનું સેવન કરવાથી બુદ્ધિનો નાશ થાય છે અને પ્રમાદ, આળસ અને હિંસક પ્રવૃત્તિ બનતી જાય છે. માટે મદ્યાપનાની માફક આ બધા પદાર્થો પણ ત્યાજ્ય જ સમજવા. ભક્ષ્યાભક્ષ્ય વિષેના સ્વામી દયાનંદના વિચારો આર્યસમાજના પક્ષને પૂરી રીતે પ્રસ્તુત કરે છે.

સોમરસ

વૈદિક સાહિત્યમાં સોમનો મહિમા ખૂબ જ ગાવામાં આવ્યો છે. આ શબ્દ ગુણવાચક છે. પરમાત્માનું એક નામ સોમ છે, કારણ કે સર્વનો ઉત્પાદક અને સર્વને આનંદ તથા ઐશ્વર્ય પ્રદાન કરનાર છે. સર્વને સન્માર્ગ તરફ પ્રેરણા કરવાવાળો ઈશ્વર સોમ છે. ચંદ્ર દ્વારા શીતળતા અને પ્રસન્નતાની પ્રાપ્તિ થાય છે, આથી ચંદ્રને પણ સોમ કહેવામાં આવ્યો છે.

કઠોર પરિશ્રમ કરવાથી જે પેદા થાય છે તેને પણ સોમ કહેવામાં આવે છે. ઉત્પન્ન કરવાની ભાવનાને અગ્નિ કહેવામાં આવે છે, અને જે પ્રદાર્થ ઉત્પન્ન થાય છે તેને સોમ કહેવામાં આવે છે. પદાર્થ-પ્રાપ્તિની પ્રક્રિયામાં જે શુષ્કતા આવી જાય છે એ શુષ્કતા પદાર્થ પ્રાપ્ત થઈ જાય પછી આર્દ્રતામાં ફેરવાઈ જાય છે. આથી વિદ્યા અને ચરિત્ર સંપન્ન સ્નાતકનું નામ પણ સોમ છે. સોમનો અર્થ છે : આનંદપ્રદાતા, શીતળતા પ્રદાન કરનાર, આર્દ્રતા અને બુદ્ધિ પ્રદાન કરનાર. આવા ગુણ જે વનસ્પતિમાં જોવા મળે છે તે વનસ્પતિના રસને પણ 'સોમરસ' કહેવામાં આવે છે. આપણા ઋષિમુનિઓ આવા પ્રકારનો સોમરસ ઉત્પન્ન કરીને તેનું સેવન કરતા હતાં. સમયની સાથે સાથે સુશ્રુત આદિની શલ્ય-ચિકિત્સા અને ઔષધ-નિર્માણની કળા ક્ષીણ થતી ગઈ. સોમરસ જેવા પવિત્ર પેય પદાર્થની કલ્પના સુરાની સાથે જોડી દીધી. સોમરસ મજાકનો શબ્દ બની ગયો. હકીકતમાં આ બંને શબ્દો - સોમ અને સુરા વિરુદ્ધ અર્થ ધરાવતા શબ્દો છે, પરંતુ લૌકિક જગતમાં એ પર્યાય મનાવા માંડ્યા.

આવ્યો છે -
**સત્યં યજ્ઞઃ શ્રીઋષોતિઃ સોમઃ ।
અનૂતમ્ પાપ્યા તમઃ સુરા ॥ - શતપથ(૫-૧૨-૧૦)**
અર્થાત્ સોમ સત્ય છે, યજ્ઞ છે, શ્રી છે, જ્યોતિ છે, જ્યારે તેનાથી ઊલટું સુરા અનૂત છે, પાપ છે, અંધકાર છે. સોમ દ્વારા શરીરમાં બળ, વીર્ય, આર્દ્રતા અને બુદ્ધિની વૃદ્ધિ થાય છે, જ્યારે સુરા મનુષ્યને વિવેકહીન બનાવે છે, શરીરમાં રહેલા બળને ઉદીમ માત્ર કરે છે. એનાથી નવું બળ ઉત્પન્ન થતું નથી. સુરા આત્મહત્યારી વસ્તુ છે. તે શરીરને ક્ષીણતા તરફ દોરી જાય છે. આર્યોનું ચિંતન, મનન અને ખાનપાન બધું જ હંમેશાં સોમ રહ્યું છે. આજે જે રીતે અમૃતવર્ષા, અમૃતપાન, અમૃતવચન વગેરે શબ્દોનો પ્રયોગ થાય છે, એવી જ રીતે સોમરસના મહત્વનો ઉલ્લેખ આર્ષગ્રંથોમાં અનેક સ્થાને કરવામાં આવ્યો છે. સોમ સરોવરમાં ડૂબકી લગાવનારા આપણા પૂર્વજ આર્યો સોમરસનું પાન કરતા હતા. એ સોમરસ શરાબ કે સુરા કદાપિ ન હતો. આ તો ઈતિહાસને વિકૃત કરનારા ચાલાક લોકોએ સોમરસને સુરા કહીને પ્રલાપ કર્યો છે.

ગુજરાતભરની તમામ આર્યસમાજો તથા વૈદિક પ્રચાર સાથે સંલગ્ન સંસ્થાઓને પોતાના સાપ્તાહિક સત્સંગ સહિતના તમામ સમાચારોને ફોટોગ્રાફ સાથે મોકલી આપવા વિનંતી છે. આપ ઈ-મેઈલના માધ્યમથી પણ સમાચાર મોકલી શકો છો.

: કાર્યાલય :

૭૯૧/૩/૩, પંચશીલ પાર્ક, સેક્ટર-૨૧, ગાંધીનગર-૩૮૨૦૨૧.
ફોન-(૦૭૯) ૨૩૨૧૦૦૭૧

E-mail : agnipathgnr@gmail.com

● ભક્ષ્ય અને અભક્ષ્યનો વિચાર બે રીતે થઈ શકે છે : (૧) ધર્મશાસ્ત્રની રીતે અને (૨) વૈદ્યક શાસ્ત્રની રીતે.

● જે ભક્ષ્ય હિંસા, ચોરી, વિશ્વાસઘાત, ઇળા-કપટ વગેરે કરીને મેળવ્યું હોય તેને અભક્ષ્ય ગણવું, અને જેમાં હિંસા આદિ ન કરવાં પડે તથા પવિત્ર ક્રિયાથી જે મેળવી શકાય તેને ભક્ષ્ય સમજવું.

● જેનાથી આરોગ્ય, રોગનાશ, બુદ્ધિ, બળ, પરાક્રમ અને

શતપથની એક કંડિકામાં સોમ અને સુરાનો ભેદ બતાવવામાં

દરેક ગૃહસ્થીએ પંચમહાયજ્ઞોનું અનુષ્ઠાન અવશ્ય કરવું જોઈએ : શ્રી ચંદ્રેશજી આર્ય

પંચવટી શ્રીમતિ કંકુબેન રામજી હરદાસ વાડીયા પરિવાર 'પંચવટી ફાર્મ' શિરવા ખાતે શ્રીમતિ વર્ષાબેન કલ્પેશભાઈ વાડીયાના સીમન્તોત્તમ પ્રસંગે ગાંધીધામ નિવાસી વૈદિક પ્રચારક શ્રી ચંદ્રેશજી આર્ય ખાસ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. આ પ્રસંગે વૈદિક સત્સંગનો કાર્યક્રમ યોજવામાં



આપણે પાપરૂપી કર્મોથી બચી શકીએ છીએ. માટે વૈદિક દ્રષ્ટિએ દરેક માનવે દર કલાકે ઈશ્વર મને જોઈ, સાંભળી અને જાણી રહ્યો છે એ વાક્યનું ઉચ્ચારણ કરવું જોઈએ. અને પાપોથી બચવા પ્રત્યેક ક્ષણ દરેક માનવે સ્વયં એકલો છે એ અનુભૂતિને ભૂલાવીને એવી અનુભૂતિ કરવી જોઈએ કે એક ઈશ્વર પ્રત્યેક ક્ષણે-

સાધ્ય સુધી પહોંચવાનો માર્ગ છે. કાર્યક્રમના ઉત્તરાર્ધ ભાગમાં ગૃહસ્થાશ્રમના પંચયજ્ઞો વિશે પ્રકાશ પાડતાં શ્રી ચંદ્રેશજીએ પ્રભયજ્ઞ અને દેવયજ્ઞ અગ્નિહોત્ર વિશે વૈજ્ઞાનિક અભિગમથી સમજણ આપી હતી. જે વ્યક્તિ પ્રભયજ્ઞ અને દેવયજ્ઞ નથી કરતો તે વ્યક્તિ ઈશ્વર કૃપાને પાત્ર નથી થતો. માટે દરેક ગૃહસ્થીએ પ્રત્યેક દિન ઈશ્વરોપાસના માટે બંને સમય સંધ્યા-ઉપાસના કરવી જોઈએ અને અગ્નિહોત્ર વગર ભોજન પણ ન કરવું જોઈએ કારણ કે આ ઈશ્વરની વૈદિક આજ્ઞા વગર ઈશ્વરની કૃપા પાત્ર ન થવાય. માટે દરેક ગૃહસ્થીએ પંચમહાયજ્ઞોનું અનુષ્ઠાન અવશ્ય કરવું જોઈએ.



આવ્યો હતો. આ કાર્યક્રમની શરૂઆત ઈશ્વરની ભજનથી કરવામાં આવી હતી. સુશ્રી જાગૃતિ વાડીયા અને સુશ્રી કીજલ વાડીયા દ્વારા ભજનની પ્રસ્તુતિ કરવામાં આવી હતી.

દરિદ્ર અને દુઃખી છે. એ માટેના કારણો જાણવા જરૂરી છે. આટલા બધાં ધાર્મિક પ્રસંગો, કથાઓ, સત્સંગોનું આયોજન થવા છતાં માનવોમાં ધાર્મિકતાઓ અભાવ છે. સાચો ધાર્મિક માનવ સાચા કાર્યો દ્વારા સુખી શાંત અને પ્રસન્ન હોય છે. શ્રી ચંદ્રેશજીએ દાર્શનિક દ્રષ્ટિકોણથી ત્રણ પ્રકારના નાસ્તિકોની પરિભાષા ઉદાહરણ સહિત સમજાવી હતી. કર્મની પ્રાધાન્યતા વિશે સમાજવતાં તેમણે કહ્યું હતું કે, આપણા દરેક કાર્યમાં ઈશ્વરને સાથે રાખવાથી

ક્ષણે અમારી સાથે છે. જ્યારે આવા પ્રકારની અનુભૂતિનો અનુભવ થશે ત્યારે જ વ્યક્તિ પાપરૂપી કર્મોથી બચી શકશે. પરિણામે દુઃખોથી બચી સુખને પ્રાપ્ત કરશે. માટે વૈદિક માનવીએ ઈશ્વર સર્વ-વ્યાપક છે એ અનુભૂતિને કેવળ શાબ્દિક રીતે નહીં પણ વ્યવહારિક રીતે અનુભૂતિ કરવી જોઈએ.

કાર્યક્રમમાં આર્યસમાજ માંડવીના પદાધિકારી શ્રી લખમશી હરદાસ વાડીયા પરિવાર આર્ય ફાર્મ, શિરવાથી ખાસ પધાર્યા હતા. અંતમાં શ્રી કિર્તીચંદ્ર વાડીયા શાસ્ત્રીએ આભાર વિધી કરી સૌનો આભાર માન્યો હતો. તેમણે આ સાથે ચંદ્રેશજીએ પણ વિશેષ આભાર માન્યો હતો.

ત્યાર બાદ શ્રી ચંદ્રેશજીએ પોતાના પ્રાસંગિક પ્રવચનમાં ભારત દેશની વિચિત્ર આધ્યાત્મિકતા વિશે પ્રકાશ પાડતાં જણાવ્યું હતું કે, ભારતમાં સૌથી વધુ સમય, શક્તિ અને સંપત્તિનો પ્રયોગ ધાર્મિક કાર્યો માટે થાય છે. છતાં ભારત દેશ

શબ્દો કેવળ સાધન છે. સાધન તો આપણે માત્ર શાબ્દિકરૂપે જ ઈશ્વરને પ્રાપ્ત કરવાનો કે સુખી થવાનો પ્રયત્ન કરીએ છીએ પણ શબ્દો કેવળ સાધન છે. સાધન તો

કાર્યક્રમને સફળ બનાવવા માટે વાડીયા પરિવારના શ્રીમતી નયના વાડીયા, સુશ્રી ચાંદની વાડીયા, નિતીન વાડીયા, સુરેશ વાડીયા અને શ્રી વિજય વાડીયાનો સહયોગ પ્રાપ્ત થયો હતો.

શ્રી કચ્છી કડવા પાટીદાર મહિલા મંડળ, બોરીવલી દ્વારા પાટીદાર વાડી ખાતે 'યજ્ઞ ચિકિત્સા'નો કાર્યક્રમ સફળતાપૂર્વક સંપન્ન

મુંબઈ ઝડપી અસર કરે છે. તેમણે વધુમાં જણાવ્યું હતું કે, યજ્ઞની સાથે સાથે પ્રાણાયમ કરવાથી અનેક જટીલ રોગો દૂર થાય છે યજ્ઞ બાદ પોતાના પ્રવચનમાં તેમણે 'યજ્ઞ ચિકિત્સા' બાબતે સમજાવતાં કહ્યું હતું કે, યજ્ઞ એ સર્વશ્રેષ્ઠ કર્મ છે. તે ઋષિઓની દેન છે. યજ્ઞ કરવાથી રોગો તો દૂર થાય છે જ પરંતુ પરિવાર અને આસપાસમાં રહેતા લોકોને અને પ્રાણીમાત્રને પણ આનો લાભ મળે છે. યજ્ઞની અગ્નિથી રોગના જીવાણુઓનો નાશ થાય છે તેમજ પર્માવરણની શુદ્ધિ પણ થાય છે. આને પરિણામે આપણને શુદ્ધ પ્રાણવાયુ પણ મળે છે. અત્યાર સુધીમાં તેમણે યજ્ઞ ચિકિત્સાના માધ્યમથી ઘણાં બધાં રોગો ઉપર કાબુ મેળવ્યો છે.

યજ્ઞની સાથે સાથે ડૉ. તારસિંગ આર્યએ બહેનોને વિશેષ આહાર બાબતે સજાગ રહેવા જણાવ્યું હતું. તેમણે રસોઈમાં માટીના વાસણોનો વધુ વપરાશ કરવા અનુરોધ કર્યો હતો. તેમણે જણાવ્યું હતું કે માટીના વાસણમાં રસોઈ બનાવવાથી તેમાં રહેલા તત્ત્વો સચવાઈ રહે છે. પૂરા પરિવારનું સ્વાસ્થ્ય મહિલાઓના હાથમાં છે અને તેથી જ મહિલાઓએ જાગૃત થવાની જરૂર છે. કાર્યક્રમના અંતમાં ડૉ. તારસિંગ આર્યએ સ્વાસ્થ્ય સંબંધીત પ્રશ્નોત્તરીના ઉત્તરો આપ્યા હતા.

ડૉ. તારસિંગ આર્ય કે જેઓ એમ.ડી.(એ એમ) આયુર્વેદ રત્ન છે તેમણે યજ્ઞ ચિકિત્સા ઉપર પી.એચ.ડી. કરેલું છે. 'યજ્ઞ ચિકિત્સા'ના આ કાર્યક્રમની સાથે સાથે યોગ પ્રશિક્ષક સુશ્રી અરુણાબેન પ્રેમજીયાણી દ્વારા હાજર રહેલી બહેનોને પ્રાણાયમનું પ્રશિક્ષણ પણ આપ્યું હતું. આ કાર્યક્રમમાં બોરિવલી, દહીંસર, કાંદિવલી, મીરાં રોડ અને ઘાટકોપરથી વૈદિક પ્રેમી લોકો પધાર્યા હતા. આ કાર્યક્રમમાં વિશેષ રૂપે ટ્રસ્ટ મંડળના ટ્રસ્ટીઓ સર્વશ્રી જેન્તીભાઈ પરવાડીયા, શ્રી હંસરાજભાઈ વાસાણી તેમજ બોરિવલી સમાજના આગેવાનો શ્રી હિરાલાલભાઈ ભાવણી, શ્રી માધવજીભાઈ પોકાર, શ્રી દેવશીભાઈ લીંબાણી, શ્રી જેન્તીભાઈ પ્રેમજીયાણી અને પરેશભાઈ પ્રમજીયાણી ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. ડૉ. તારસિંગના આમંત્રણને માન આપીને ચિત્રલેખાના પ્રતિનિધિ શ્રી પ્રકાશભાઈ ખાસ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

પાટીદાર મહિલા મંડળ બોરિવલીના પ્રમુખ શ્રીમતી વનિતાબેન છાભેયાએ ડૉ. તારસિંગ આર્ય તથા ચિત્રલેખાના પ્રતિનિધિ શ્રી પ્રકાશભાઈનું સ્વાગત કર્યું હતું. અંતમાં મહિલા મંડળના શ્રીમતી શાંતાબેન પરવાડીયાએ આભાર વિધી કરી હતી.

ફોટો ગેલેરી

આર્ય પરિવાર સ્નેહ મિલન

તાજેતરમાં આર્યસમાજ, સુરેન્દ્રનગર દ્વારા સ્નેહ મિલનનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. આ સ્નેહ મિલન સમારોહમાં લગભગ ૨૦૦ જેટલી વ્યક્તિઓએ ભાગ લીધો હતો. આ કાર્યક્રમમાં અતિથિ વિશેષ તરીકે સાંસદ શ્રી શંકરભાઈ વેગડ, ધારાસભ્ય શ્રીમતી વર્ષાબેન દોશી, સુરેન્દ્રનગર પાલિકાના પ્રમુખ શ્રી બિપીનભાઈ ટોળીયા, કરમોરા ગૃપના શ્રી પ્રકાશભાઈ વરમોરા વગેરે ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

સ્પોર્ટ્સ ઓથોરિટી ઓફ ઈન્ડિયાનાં મલ્ટીપરપઝ હોલ ખાતે યોજાયેલી ગુજરાત સ્ટેટ વાડોકાઈ કરાટે ચેમ્પિયનશીપમાં ૨૭ ગોલ્ડ મેડલ્સ સાથે આણંદની ટીમ પ્રથમ

ગાંધીનગર ઓલ ઈન્ડિયા વાડોકાઈ કરાટે-ડો એસોસિએશનની ગુજરાત બ્રાન્ચ દ્વારા વાડોકાઈ કરાટે-ડો એકેડમી, ગુજરાતનાં સહયોગથી ગાંધીનગરમાં રાજ્ય ક્લાની કરાટે સ્પર્ધાનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. સ્પોર્ટ્સ ઓથોરિટી ઓફ ઈન્ડિયાનાં મલ્ટીપરપઝ હોલમાં તાજેતરમાં યોજાયેલી આ સ્પર્ધામાં ૧૦ જિલ્લાનાં ૪૬૪ જેટલા ખેલાડીઓએ ભાગ લીધો હતો. ઉદ્ઘાટન સમારોહમાં અતિથિ વિશેષ તરીકે રોટરી ક્લબ ઓફ કપિટલ, ગાંધીનગરનાં પૂર્વ પ્રમુખો શ્રી યુવરાજસિંહ વાઘેલા, શ્રીમતી અમીબહેન શાહ સહિત



રોટરીયન ડૉ. અંકુર પરમાર પણ ઉપસ્થિત રહ્યાં હતા. વાડોકાઈ કરાટે-ડો એકેડમીનાં ટેકનિકલ

ડાયરેક્ટર ઓ'સેનસાર્થી શ્રી અરવિંદભાઈ રાણાએ સ્વાગત પ્રવચન કર્યું હતું. ત્યારબાદ મંચસ્થ મહાનુભાવોએ સ્પર્ધા ખુલ્લી મુકવાની ઘોષણા કરી હતી. સવારથી જ એક સાથે સાત રીંગમાં ખેલાડીઓએ પોતાનું કૌવત દેખાડવાનું શરૂ કરી દીધું હતું. આ સ્પર્ધામાં સૌથી વધુ ૨૭ ગોલ્ડ મેડલ્સ મેળવી આણંદ જિલ્લાની ટીમ પ્રથમ સ્થાને રહી હતી. જ્યારે પોરબંદર જિલ્લાની ટીમ ૧૫ ગોલ્ડ મેડલ્સ સાથે દ્વિતીય અને ગાંધીનગરની ટીમ ૧૨ ગોલ્ડ મેડલ્સ સાથે તૃતીય સ્થાને રહી

હતી. સ્પર્ધાના સમાપન પ્રસંગે રોમાંચક ફાઈનલ ફાઈટ્સ બાદ ઉપસ્થિત સ્પોર્ટ્સ ઓથોરિટી ઓફ ઈન્ડિયાનાં રીજીયોનલ ડાયરેક્ટર શ્રી આર. કે. નાયડુ, ગુજરાત રાજ્યનાં પૂર્વ પોલીસ વડા તથા કરાટે એસોસિએશનનાં સંરક્ષક શ્રી પી. કે. બંસલ, ચેરમેન શ્રી રાજેશ અગ્રવાલ, ટેકનિકલ ડાયરેક્ટર શ્રી અરવિંદ રાણા વગેરે મંચસ્થ મહાનુભાવોના વરદ હસ્તે વિજેતા ટીમને તથા રનર્સ-અપ ટીમને ટ્રોફી એનાયત કરવામાં આવી હતી.

સંતશ્રી ઓધવરામ ગુરુકુલ ભવાનીપરના આચાર્ય સ્વામી શાંતાનંદજી દ્વારા વૈદિક ધર્મનો દ્વારકામાં પ્રચાર

સંતશ્રી ઓધવરામ ગુરુકુલ, ભવાનીપરના આચાર્ય સ્વામી શાંતાનંદજીએ તાજેતરમાં જ દ્વારકા ખાતે શ્રી યોગેશજી આર્ય સાથે પ્રચાર યાત્રા સંપન્ન કરી હતી. આ પ્રચાર યાત્રામાં સ્વામીજીએ ટાટાના મીઠાપુર ખાતે શ્રી ભરતભાઈ દ્વારા આયોજીત એક સત્સંગમાં મુખ્ય વક્તા તરીકે હાજર રહી ગૃહસ્થ ધર્મનું પાલન કરતાં કરતાં કેવી રીતે ઈશ્વરની સમીપ જઈ શકાય તે વિવિધ રોચક ઉદાહરણો દ્વારા સમજાવ્યું હતું.

ત્યાર બાદ સ્વામીજીએ દ્વારકાપીથ મંદિરની મુલાકાત લીધી હતી. મંદિરના ટ્રસ્ટી શ્રી આશ્રમની મુલાકાત લીધી હતી. સાંદિપની આશ્રમના સંચાલક શ્રી ઓઝાજી સાથેની મુલાકાત દરમ્યાન અનેક વિષયો પણ ચર્ચા કરવામાં આવી હતી. તેમણે કહ્યું હતું કે, અમારા મંદિરમાં પણ વેદ-ભગવાન પ્રતિષ્ઠિત છે. જ્યારે તેમના શિષ્યો દ્વારા તેમને વેદના દર્શન કરાવવામાં આવ્યા ત્યારે તે વેદ એક કાંચની પેટીમાં બંધ હતા અને વેદની જગ્યાએ ભાગવતનું જ્ઞાન આપવામાં આવી રહ્યું હતું.



હરિભાઈએ સ્વામીજીનું સ્વાગત કર્યું હતું. સ્વામીજીએ શ્રી આપ્યું હતું

અભિનંદન

અગ્નિપથના વાયક વર્ગને ફેલાવવામાં પ્રસંશનીય સહયોગ કરતાં પોરબંદર આર્યસમાજના મંત્રી શ્રી ધનજીભાઈ આર્યાના સુપુત્ર ચિ. અનિલ આર્ય આગામી તા. ૪થી ફેબ્રુઆરી ૨૦૧૪ના રોજ શ્રી રમેશભાઈ ગોહેલની સુપુત્રી ચિ. અંજલી સાથે ગૃહસ્થાશ્રમમાં પ્રવેશ કરી રહ્યા છે. અગ્નિપથ પરિવાર તરફથી તેમને આ પ્રસંગે ખૂબ ખૂબ શુભકામના.....

અગ્નિપથ

અમારું ઘર અમારું ગણવું

- ➡ સાંપ્રત ઘટનાઓનું આદર્શ દષ્ટિકોણથી વિવેચન.
- ➡ વૈદિક સાહિત્યના ગહન સિદ્ધાંતોનું સરળ પ્રસ્તુતિકરણ.
- ➡ વેદ-દર્શન-ઉપનિષદ જેવા આધ્યાત્મિક ગ્રન્થોમાં નિહિત જ્ઞાનની સરળ પ્રસ્તુતિ.
- ➡ બાળકો માટે ઉપદેશ કથા.

- ➡ સ્વાસ્થ્ય સંબંધિત જાણકારી.
- ➡ વૈદિક વિદ્વાનોના ચિંતનાત્મક લેખો.
- ➡ ગુજરાતના આર્યસમાજોના કાર્યક્રમોના સમાચારો.
- ➡ રાષ્ટ્રીય અને સાંસ્કૃતિક ગૌરવના ભાવ ભરતું એકમાત્ર ક્રાંતિકારી સામાસિક.

કાર્યાલય :

૭૯૧/૩/૩, પંચશીલ પાર્ક, સેક્ટર-૨૧, ગાંધીનગર-૩૮૨૦૨૪. ફોન - (૦૭૯) ૨૩૨૧૦૦૭૧
E-mail : agnipathgnr@gmail.com